



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक विषमताओं का यथार्थपरक चित्रण

*¹ चंद्रहास

*¹ पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 5.231

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 26/July/2024

Accepted: 26/Aug/2024

सारांश:

हिंदी कथा-साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान युगप्रवर्तक साहित्यकार के रूप में स्थापित है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के विविध पक्षों का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण किया। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं। प्रेमचंद ने किसान, मजदूर, दलित, स्त्री, निम्न एवं मध्यम वर्ग सहित समाज के उपेक्षित वर्गों की समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी रचनाओं में गरीबी, शोषण, जातिगत भेदभाव, सामंती व्यवस्था, धार्मिक रूढ़ियाँ, भ्रष्टाचार तथा मानवीय मूल्यों के संकट का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रेमचंद की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को केवल प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसके कारणों का विश्लेषण भी करती हैं तथा समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। उनके पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं और पाठक को सामाजिक विषमताओं के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। उनकी दृष्टि मानवतावादी है, जिसमें न्याय, समानता, करुणा और नैतिकता को विशेष महत्व दिया गया है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं। यह शोध-पत्र प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों-पूँस की रात, कफ़न, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, सद्गति, नमक का दारोगा तथा बड़े घर की बेटी-के आधार पर सामाजिक यथार्थ के विविध आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

*Corresponding Author

चंद्रहास

पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत।

मुख्य शब्द: प्रेमचंद, सामाजिक यथार्थ, किसान, दलित, स्त्री, गरीबी, शोषण, मानवीय मूल्य, हिंदी कहानी।

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि वह समाज के जीवन, संस्कृति, संघर्ष, विश्वास और समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। किसी भी युग का साहित्य उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत होता है। हिंदी साहित्य में यदि सामाजिक यथार्थ की चर्चा की जाए तो सबसे पहले मुंशी प्रेमचंद का नाम स्मरण होता है। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर समाज-निर्माण का प्रभावी माध्यम बनाया। प्रेमचंद ऐसे समय में साहित्य-सृजन कर रहे थे जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था। देश आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता, सामंती अत्याचार, जातिगत भेदभाव और रूढ़िवादी परंपराओं से ग्रस्त था। ग्रामीण भारत गरीबी, ऋण, भूख और बेरोज़गारी की समस्या से जूझ रहा था। किसानों का जीवन महाजनों और ज़मींदारों के अत्याचारों के कारण अत्यंत दयनीय था। दलित वर्ग सामाजिक बहिष्कार और अपमान का जीवन जीने के लिए विवश था। स्त्रियाँ शिक्षा और अधिकारों से वंचित थीं। इन सभी समस्याओं को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों का आधार बनाया। प्रेमचंद की विशेषता यह है कि उन्होंने समाज का चित्रण किसी कल्पना-लोक में नहीं किया, बल्कि

वास्तविक जीवन के अनुभवों के आधार पर किया। उनके पात्र सामान्य मनुष्य हैं, जिनके सुख-दुःख, संघर्ष और आशाएँ भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। वे सामाजिक बुराइयों की आलोचना करते हैं, परंतु साथ ही मानवता, नैतिकता और सामाजिक परिवर्तन की आशा भी व्यक्त करते हैं। प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज के इतिहास का सामाजिक दस्तावेज़ हैं। इनमें केवल घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि उनके पीछे छिपी सामाजिक संरचना और मानवीय पीड़ा का गहन विश्लेषण मिलता है। इसलिए उनका कथा-साहित्य आज भी सामाजिक अध्ययन, साहित्यिक आलोचना तथा मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रेमचंद की कहानियों में दिखाई देने वाले सामाजिक यथार्थ को समझना और उसका विश्लेषण करना है। उनकी कहानियों में किसान, मजदूर, दलित और स्त्रियों के जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को सरल और वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया

गया है। इस शोध में इन वर्गों की कठिनाइयों, संघर्षों और सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, समाज में मौजूद आर्थिक असमानता, गरीबी, शोषण और भेदभाव जैसी समस्याओं को भी समझने का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा, प्रेमचंद की कहानियों में दिखाई देने वाली मानवतावादी सोच, जिसमें मनुष्य के प्रति संवेदना, समानता और सहानुभूति को महत्व दिया गया है, उसका भी मूल्यांकन किया जाएगा। अंत में, यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि प्रेमचंद की कहानियों में उठाए गए सामाजिक मुद्दे आज के समय में कितने प्रासंगिक हैं और वर्तमान समाज को उनसे क्या सीख मिल सकती है।

शोध-पद्धति

यह शोध गुणात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों का गहन पाठ किया गया है। साथ ही हिंदी आलोचना, शोध-पत्रों, संदर्भ ग्रंथों तथा साहित्यिक समीक्षाओं का उपयोग किया गया है। प्राप्त सामग्री का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पक्षों की व्याख्या की गई है। अध्ययन का आधार मुख्यतः पुस्तकालयीय पद्धति है।

प्रेमचंद का साहित्यिक परिचय

मुंशी प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। प्रारंभिक लेखन उन्होंने नवाब राय नाम से किया, किंतु बाद में प्रेमचंद नाम से लिखना प्रारंभ किया। उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के लमही गाँव में हुआ। उन्होंने अपने जीवन में आर्थिक अभाव, पारिवारिक संघर्ष तथा सामाजिक विषमताओं का निकट से अनुभव किया। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में कृत्रिमता नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविकता दिखाई देती है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से किसान, मजदूर, दलित, स्त्री, निम्न एवं मध्यम वर्ग, बेरोज़गार, शोषित तथा उपेक्षित समाज की आवाज़ को अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना, बल्कि उसे समाज-सुधार का प्रभावी माध्यम बनाया। उनके अनुसार साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को अधिक संवेदनशील, नैतिक और जागरूक बनाना है। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है- "साहित्य जीवन की आलोचना है।" [1] यह कथन उनके संपूर्ण साहित्य की मूल चेतना को व्यक्त करता है। प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज के विविध पक्षों का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। पूस की रात, कफ़न, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, सद्गति, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर तथा दो बैलों की कथा जैसी कहानियाँ आज भी सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इन कहानियों में जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों के माध्यम से बड़ी सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। प्रेमचंद का यथार्थ निराशावादी नहीं है। वे समाज की समस्याओं को सामने रखते हुए उनके समाधान की दिशा भी संकेतित करते हैं। उनकी दृष्टि मानवतावादी है। वे जाति, धर्म, वर्ग और आर्थिक असमानता से ऊपर उठकर मनुष्य को सबसे बड़ा मूल्य मानते हैं। इसलिए उनका साहित्य आज भी भारतीय समाज को समझने का विश्वसनीय स्रोत माना जाता है।

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ (क) किसान जीवन और आर्थिक विषमता

प्रेमचंद की कहानियों में किसान के जीवन का बहुत ही सजीव और वास्तविक चित्र मिलता है। उन्होंने ऐसे किसानों की कहानी लिखी है जो दिन-रात मेहनत करते हैं, लेकिन फिर भी उनकी गरीबी दूर नहीं होती। किसान अपनी पूरी ज़िंदगी कर्ज़, भूख, महाजनों के शोषण

और प्राकृतिक कठिनाइयों के बीच बिताता है। प्रेमचंद ने इन समस्याओं को बहुत सहज और प्रभावशाली ढंग से अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी भारतीय किसान के जीवन का सच्चा दस्तावेज़ माना जाता है। अंग्रेज़ों के शासनकाल में किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। खेती किसान करता था, लेकिन उसकी मेहनत का पूरा लाभ उसे नहीं मिलता था। ज़मींदार लगान वसूल लेते थे और महाजन ऊँचे ब्याज पर कर्ज़ देकर किसानों का शोषण करते थे। ऐसी स्थिति में किसान के पास अपने परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए भी पर्याप्त धन नहीं बचता था। प्रेमचंद ने इस आर्थिक विषमता को अपनी कहानियों में बहुत ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी पूस की रात भारतीय किसान की कठिन ज़िंदगी का बहुत ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है। इस कहानी का मुख्य पात्र हल्कू एक गरीब किसान है। वह मेहनती है, लेकिन गरीबी और कर्ज़ के कारण अपनी छोटी-छोटी ज़रूरतें भी पूरी नहीं कर पाता। उसके ऊपर महाजन का कर्ज़ है। ठंड से बचने के लिए उसे कंबल खरीदना चाहिए, लेकिन कर्ज़ चुकाने की मजबूरी उसे ऐसा करने नहीं देती। अपनी विवशता व्यक्त करते हुए हल्कू कहता है- "सहना तो पड़ेगा ही, नहीं दोगे तो गाली खाएँगे।" [2] यह छोटा-सा संवाद उस समय के किसान की पूरी आर्थिक स्थिति को सामने रख देता है। किसान अपनी मेहनत की कमाई भी अपने परिवार पर खर्च नहीं कर पाता, क्योंकि पहले उसे महाजन का कर्ज़ चुकाना पड़ता है। हल्कू की पत्नी मुन्नी भी घर की आर्थिक तंगी से परेशान है। वह चाहती है कि पहले ठंड से बचने का इंतज़ाम हो, लेकिन मजबूरी ऐसी है कि कंबल की जगह कर्ज़ चुकाना पड़ता है। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि किसान परिवार अपनी सामान्य आवश्यकताओं को भी पूरा करने में असमर्थ था। कहानी में पड़ने वाली कड़ाके की ठंड केवल मौसम का वर्णन नहीं है, बल्कि किसान के कठिन जीवन का प्रतीक है। हल्कू पूरी रात खेत की रखवाली करता है, लेकिन ठंड इतनी अधिक होती है कि उसका शरीर जवाब देने लगता है। अंत में वह आग तापने के लिए खेत छोड़ देता है और नीलगाय पूरी फसल चर जाती है। इस स्थिति को देखकर पाठक समझ जाता है कि गरीबी केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की शारीरिक क्षमता, मानसिक स्थिति और निर्णय लेने की शक्ति को भी प्रभावित करती है। हल्कू का जीवन यह बताता है कि जब मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाता, तब उसके लिए अपने कर्तव्यों का पूरी तरह निर्वाह करना भी कठिन हो जाता है। यही कारण है कि कहानी पढ़ते समय हल्कू केवल एक पात्र नहीं लगता, बल्कि वह उस दौर के लाखों भारतीय किसानों का प्रतिनिधि बन जाता है। कहानी का अंत किसान जीवन की विडंबना को और भी गहरा कर देता है। पूरी रात की मेहनत के बाद भी उसकी फसल नष्ट हो जाती है और उसके हिस्से में केवल निराशा आती है। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि किसान की गरीबी उसके आलस्य का परिणाम नहीं, बल्कि शोषणकारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का परिणाम है। इसलिए पूस की रात केवल एक किसान की कहानी नहीं है, बल्कि उस पूरे वर्ग की पीड़ा का यथार्थ चित्रण है, जिसने अपनी मेहनत से समाज का पेट भरा, लेकिन स्वयं अभाव और कठिनाइयों में जीवन बिताया।

कफ़न में गरीबी का विकृत रूप

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी कफ़न भारतीय समाज में फैली गरीबी, भूख और सामाजिक असमानता का बहुत ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है। इस कहानी के मुख्य पात्र घीसू और माधव हैं, जो अत्यधिक गरीबी और बेरोज़गारी से जूझ रहे हैं। उनके पास न रहने का अच्छा साधन है और न ही खाने की व्यवस्था। लगातार अभाव में जीवन बिताने के कारण उनके भीतर जीवन के प्रति उत्साह और संवेदनाएँ भी धीरे-धीरे समाप्त होती दिखाई देती हैं। प्रेमचंद इस

कहानी के माध्यम से यह दिखाना चाहते हैं कि लंबे समय तक गरीबी झेलने वाला व्यक्ति केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी टूट जाता है। कहानी की शुरुआत ही अत्यंत मार्मिक स्थिति से होती है। माधव की पत्नी बुधिया प्रसव पीड़ा से तड़प रही होती है, लेकिन घीसू और माधव उसके लिए कोई सहायता नहीं कर पाते। वे उसकी पीड़ा को देखकर भी असहाय बने रहते हैं। यह दृश्य उनकी संवेदनहीनता नहीं, बल्कि उनकी गहरी सामाजिक और आर्थिक विवशता को सामने लाता है। बुधिया की मृत्यु के बाद गाँव के लोग उसके अंतिम संस्कार के लिए कफ़न खरीदने हेतु कुछ पैसे इकट्ठा करके देते हैं, लेकिन घीसू और माधव उन पैसे से भोजन और शराब पी लेते हैं। इस प्रसंग में घीसू कहता है-"कफ़न लगाने से क्या मिलता? आखिर जल ही तो जाता।" [3] इसके बाद दोनों अपनी विवशता को सही ठहराते हुए कहते हैं-"जिसे जीते-जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिला, उसे मरने पर नया कफ़न क्यों चाहिए?" [4]

पहली नज़र में उनका यह व्यवहार अमानवीय लगता है, लेकिन प्रेमचंद पाठक को इसके पीछे छिपे सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। लगातार भूख, गरीबी और अपमान ने घीसू और माधव को इस स्थिति में पहुँचा दिया है कि उनके लिए जीवन और मृत्यु का महत्व भी बदल गया है। वे उस समाज के प्रतिनिधि हैं, जिसे कभी सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर ही नहीं मिला। इसलिए प्रेमचंद यहाँ व्यक्तियों की नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते हैं, जिसने मनुष्य को इतनी दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया। इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि अत्यधिक गरीबी केवल आर्थिक संकट नहीं लाती, बल्कि वह मनुष्य की सोच, उसकी संवेदनाओं और उसके नैतिक मूल्यों को भी गहराई से प्रभावित करती है। यही कारण है कि कफ़न हिंदी कहानी साहित्य में सामाजिक यथार्थ की सबसे प्रभावशाली कहानियों में गिनी जाती है।

आर्थिक असमानता का यथार्थ

प्रेमचंद की अनेक कहानियों में समाज के दो वर्ग स्पष्ट दिखाई देते हैं- एक ओर संपन्न वर्ग, जिसके पास संसाधनों की प्रचुरता है; दूसरी ओर गरीब वर्ग, जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी संघर्ष करता है। यह वर्गीय असमानता भारतीय समाज की गंभीर समस्या रही है। लेखक यह संकेत करते हैं कि आर्थिक विषमता केवल धन का अंतर नहीं है, बल्कि अवसरों, शिक्षा, सम्मान और न्याय तक पहुँच का भी अंतर है। गरीब व्यक्ति निरंतर परिश्रम करता है, किंतु उसका जीवन नहीं बदलता; जबकि संपन्न वर्ग बिना श्रम के भी सुविधाओं का उपभोग करता रहता है। इस प्रकार प्रेमचंद आर्थिक अन्याय को सामाजिक अन्याय से जोड़कर देखते हैं। इस संदर्भ में उनका दृष्टिकोण अत्यंत मानवीय है। वे किसी वर्ग के प्रति घृणा नहीं फैलाते, बल्कि ऐसी सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देते हैं जहाँ श्रम का उचित सम्मान हो, शोषण समाप्त हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो।

(ख) जाति-व्यवस्था और दलित जीवन का यथार्थ

प्रेमचंद की कहानियों में जातिगत भेदभाव और दलित जीवन का चित्रण बहुत ही संवेदनशील और यथार्थपूर्ण ढंग से किया गया है। उन्होंने ऐसे समय में लेखन किया, जब भारतीय समाज में जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेद बहुत गहरा था। दलित समाज को मंदिर, कुएँ, शिक्षा और सामाजिक सम्मान जैसे सामान्य अधिकारों से भी वंचित रखा जाता था। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था का खुलकर विरोध किया। उनके अनुसार मनुष्य की पहचान उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म, चरित्र और मानवीय गुणों से होनी चाहिए। प्रेमचंद की कहानियों में दलित पात्र केवल दया के पात्र नहीं हैं, बल्कि वे उस समाज की सच्चाई को सामने लाते हैं जहाँ जन्म के आधार पर मनुष्य का सम्मान तय किया

जाता था। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि जातिगत भेदभाव केवल सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि मानवता के विरुद्ध एक गंभीर अन्याय है। इसलिए उनके साहित्य में समानता, मानवता और सामाजिक न्याय की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

ठाकुर का कुआँ: अस्पृश्यता का मार्मिक चित्रण

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी ठाकुर का कुआँ भारतीय समाज में व्याप्त छुआछूत और जातिगत भेदभाव का अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है। इस कहानी की मुख्य पात्र गंगी एक दलित स्त्री है। उसका पति जोखू बीमार है और घर में पीने योग्य साफ़ पानी नहीं है। गाँव में कई कुएँ हैं, लेकिन जाति के कारण गंगी को उनमें से पानी लेने का अधिकार नहीं है। मजबूर होकर वह रात के अँधेरे में ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाती है। यह घटना केवल पानी भरने की नहीं, बल्कि अपने बुनियादी मानवीय अधिकार को प्राप्त करने का साहसिक प्रयास है। गंगी के मन में हर समय यह डर बना रहता है कि यदि किसी ने उसे कुएँ से पानी भरते हुए देख लिया, तो उसका अपमान होगा और उसे दंड भी मिल सकता है। उसकी यह आशंका उस समय के समाज की कठोर सच्चाई को सामने लाती है। इसी स्थिति को व्यक्त करते हुए कहानी में गंगी सोचती है- "अगर किसी ने देख लिया, तो न जाने क्या होगा।" [5] यह कथन गंगी के मन में बैठे भय और सामाजिक असुरक्षा को व्यक्त करता है। एक ओर समाज पानी जैसी प्राकृतिक वस्तु पर भी ऊँच-नीच का अधिकार स्थापित करता है, तो दूसरी ओर दलित वर्ग अपने ही गाँव में भय और अपमान के साथ जीवन बिताने के लिए मजबूर है। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह प्रश्न उठाते हैं कि जब प्रकृति ने जल, वायु और धरती पर सभी का समान अधिकार दिया है, तो मनुष्य ने जाति के आधार पर भेदभाव क्यों पैदा किया? इस प्रकार ठाकुर का कुआँ केवल एक कहानी नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और मानवाधिकार की सशक्त आवाज़ बन जाती है।

सद्गति: धार्मिक पाखंड और सामाजिक शोषण

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी सद्गति जातिगत शोषण और धार्मिक आडंबर पर तीखा प्रहार करती है। इस कहानी का मुख्य पात्र दुखी चमार है, जो अपनी बेटी के विवाह का शुभ मुहूर्त निकलवाने के लिए पंडित के घर जाता है। पंडित उससे कई घंटे तक कठोर श्रम करवाते हैं, लेकिन बदले में उसे न भोजन देते हैं और न ही आराम करने का अवसर। लगातार काम करने के कारण दुखी की मृत्यु हो जाती है। दुखी की मृत्यु के बाद वही पंडित, जो स्वयं को धर्म का ज्ञाता और समाज का मार्गदर्शक मानते हैं, उसकी लाश को छूने तक से डरते हैं। अंत में वे रस्सी से बाँधकर शव को घसीटते हैं। यह दृश्य समाज में फैली जातिगत अमानवीयता और धार्मिक पाखंड की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है। कहानी में दुखी की विवशता और शोषण को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। उसकी पूरी स्थिति यह बताती है कि समाज में दलित व्यक्ति के श्रम का उपयोग तो किया जाता है, लेकिन उसे सम्मान नहीं दिया जाता। इसी संदर्भ में कहानी का यह प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है- "दुखी दिन-भर काम करता रहा, पर उसे एक दाना खाने को भी न मिला।" [6]

यह उद्धरण केवल दुखी की व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि उस पूरे दलित समाज की स्थिति को व्यक्त करता है, जो वर्षों तक श्रम करता रहा, लेकिन सम्मान और अधिकारों से वंचित रहा। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि यदि धर्म मनुष्य को समानता, करुणा और सम्मान देना नहीं सिखाता, तो उसका बाहरी प्रदर्शन निरर्थक है। वे सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हुए यह संदेश देते हैं कि सच्चा धर्म वही है, जो प्रत्येक मनुष्य को समान दृष्टि से देखे। इसी कारण सद्गति आज भी जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध लिखी गई सबसे प्रभावशाली कहानियों में गिनी जाती है।

दलित चेतना का मानवीय स्वर

प्रेमचंद की विशेषता यह है कि वे केवल दलितों की पीड़ा का चित्रण नहीं करते, बल्कि समाज से आत्ममंथन की अपेक्षा भी रखते हैं। उनके साहित्य में दलित पात्र करुणा के पात्र अवश्य हैं, परंतु वे समाज के नैतिक विवेक को भी झकझोरते हैं। वे पाठक को यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि जाति के आधार पर किसी मनुष्य का अपमान करना मानवता के विरुद्ध है। इस प्रकार प्रेमचंद की कहानियाँ दलित विमर्श की प्रारंभिक और सशक्त आधारभूमि प्रस्तुत करती हैं। आज जब सामाजिक समानता और संवैधानिक अधिकारों की चर्चा होती है, तब भी उनकी कहानियाँ अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।

(ग) स्त्री जीवन और सामाजिक यथार्थ

प्रेमचंद ने भारतीय स्त्री के जीवन का अत्यंत संवेदनशील और यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। उनकी कहानियों में स्त्री केवल परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि संघर्षशील, त्यागमयी, आत्मसम्माननी और विवेकशील व्यक्तित्व के रूप में सामने आती हैं। उन्होंने स्त्रियों की समस्याओं-अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, सामाजिक असमानता, दहेज, पितृसत्तात्मक सोच तथा पारिवारिक उत्पीड़न-को गंभीरता से चित्रित किया है। प्रेमचंद का मानना था कि समाज की उन्नति स्त्री के सम्मान और शिक्षा के बिना संभव नहीं है। इसलिए उनकी अनेक कहानियों में स्त्री परिवर्तन की वाहक बनकर उभरती हैं।

बड़े घर की बेटी: परिवार और स्त्री का नेतृत्व

बड़े घर की बेटी प्रेमचंद की अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है। इसकी नायिका आनंदी धैर्य, विवेक और पारिवारिक उत्तरदायित्व का उत्कृष्ट उदाहरण है। परिवार में उत्पन्न विवाद के समय वह प्रतिशोध का मार्ग न अपनाकर प्रेम, त्याग और समझदारी से संबंधों को पुनः स्थापित करती है। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि परिवार की वास्तविक शक्ति केवल पुरुष नहीं, बल्कि स्त्री भी होती है। आनंदी का चरित्र भारतीय नारी के आदर्श गुणों का प्रतीक है, किंतु वह केवल सहनशील नहीं है; उसमें निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक परिपक्वता भी है।

ईदगाह में दादी अमीना का चरित्र

यद्यपि ईदगाह का केंद्र बालक हामिद है, फिर भी उसकी दादी अमीना भारतीय निर्धन स्त्री के संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। आर्थिक अभाव, अकेलापन और कठिन परिस्थितियों के बावजूद वह अपने पोते के प्रति ममता, त्याग और स्नेह का परिचय देती है। जब हामिद मेले से खिलौने या मिठाई के स्थान पर चिमटा खरीदकर लाता है, तब अमीना की आँखों में उमड़ आने वाला स्नेह यह सिद्ध करता है कि प्रेम और त्याग किसी भी भौतिक सुख से अधिक मूल्यवान हैं।

स्त्री की गरिमा और आत्मसम्मान

प्रेमचंद की कहानियों की स्त्रियाँ केवल दुःख सहने वाली पात्र नहीं हैं। वे परिवार को जोड़ती हैं, नैतिक मूल्यों की रक्षा करती हैं तथा अनेक परिस्थितियों में पुरुषों से अधिक विवेकपूर्ण निर्णय लेती हैं। लेखक ने स्त्री को सम्मानजनक स्थान देकर भारतीय समाज को यह संदेश दिया कि स्त्री और पुरुष समाज के समान रूप से महत्वपूर्ण अंग हैं। उनकी स्त्री-दृष्टि आधुनिक अर्थों में पूर्ण नारीवादी नहीं कही जा सकती, किंतु अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए वह अत्यंत प्रगतिशील और मानवीय है। उन्होंने स्त्री को केवल गृहस्थी तक सीमित न रखकर उसके नैतिक, सामाजिक और मानवीय व्यक्तित्व को भी प्रतिष्ठित किया।

(घ) शोषण एवं सामाजिक अन्याय

प्रेमचंद की कहानियों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक

शोषण और अन्याय का चित्रण है। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक तथा नैतिक शोषण को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में शोषण केवल किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि किसान, मजदूर, दलित, स्त्री, निम्न वर्ग तथा ईमानदार व्यक्ति-सभी किसी न किसी रूप में अन्याय का सामना करते दिखाई देते हैं। प्रेमचंद का उद्देश्य केवल इन समस्याओं का वर्णन करना नहीं था, बल्कि समाज को इनके प्रति जागरूक बनाना भी था। उनकी दृष्टि में अन्याय तब जन्म लेता है जब सत्ता, धन और सामाजिक प्रतिष्ठा का उपयोग जनहित के स्थान पर स्वार्थ के लिए किया जाता है। इसी कारण उनकी कहानियों में न्याय और अन्याय के बीच संघर्ष बार-बार दिखाई देता है।

नमक का दारोगा: ईमानदारी और भ्रष्ट व्यवस्था का संघर्ष

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी नमक का दारोगा सामाजिक अन्याय तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार का सशक्त चित्रण करती है। कहानी का मुख्य पात्र वंशीधर एक ईमानदार सरकारी अधिकारी है। उसके सामने धन, प्रभाव और पद के बल पर कानून को तोड़ने का प्रयास किया जाता है, परंतु वह अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होता। कहानी में पंडित अलोपीदीन जैसे धनवान व्यक्ति यह मानते हैं कि धन से हर व्यक्ति को खरीदा जा सकता है। किंतु वंशीधर इस धारणा को असत्य सिद्ध कर देता है। वह रिश्तत स्वीकार नहीं करता और कानून का पालन करता है। यद्यपि तत्कालीन व्यवस्था में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी अंततः उसकी ईमानदारी की विजय होती है। यह कहानी केवल एक अधिकारी की कथा नहीं है, बल्कि यह संदेश देती है कि समाज की वास्तविक शक्ति धन नहीं, बल्कि चरित्र और नैतिकता है। प्रेमचंद भ्रष्टाचार के विरुद्ध ईमानदारी को सबसे प्रभावी उत्तर मानते हैं।

पंच परमेश्वर: न्याय की सर्वोच्चता

पंच परमेश्वर प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है। इसमें जुम्न शेख और अलगू चौधरी की मित्रता तथा पंचायत में न्याय की स्थापना का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। जब अलगू चौधरी पंच बनते हैं, तब वे मित्रता के स्थान पर न्याय का पक्ष लेते हैं। बाद में जुम्न भी पंच बनने पर व्यक्तिगत प्रतिशोध को त्यागकर निष्पक्ष निर्णय देते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद यह सिद्ध करते हैं कि न्याय का स्थान व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर है। कहानी का यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है कि "पंच के पद पर बैठते ही न कोई मित्र रहता है और न कोई शत्रु; वहाँ केवल न्याय का शासन होता है।" [7] यह संदेश आज भी न्याय व्यवस्था और सामाजिक नैतिकता के लिए प्रेरणास्रोत है।

(ङ) मानवीय मूल्य एवं नैतिक चेतना

प्रेमचंद के कथा-साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानवीय मूल्य हैं। उन्होंने सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति, परिश्रम, त्याग, प्रेम, भाईचारा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है। उनकी कहानियों में पात्र अनेक कठिन परिस्थितियों से गुजरते हैं, परंतु अंततः मानवीय संवेदनाएँ ही सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। ईदगाह में हामिद का चिमटा खरीदना त्याग, संवेदना और मातृभक्ति का प्रतीक है। बड़े घर की बेटी में आनंदी पारिवारिक एकता का आदर्श प्रस्तुत करती है। पंच परमेश्वर न्याय और निष्पक्षता की प्रतिष्ठा करता है, जबकि नमक का दारोगा ईमानदारी की विजय का संदेश देता है। प्रेमचंद का विश्वास था कि समाज का वास्तविक विकास केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों की स्थापना से संभव है। उन्होंने साहित्य के माध्यम से मनुष्य के भीतर करुणा, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करने का प्रयास किया।

(च) समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि प्रेमचंद ने लगभग एक शताब्दी पूर्व अपनी कहानियाँ लिखीं, फिर भी उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वर्तमान समय में भी समाज आर्थिक असमानता, भ्रष्टाचार, जातीय भेदभाव, लैंगिक असमानता, बेरोज़गारी तथा नैतिक मूल्यों के संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। आज भी अनेक किसान आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। समाज में जातिगत भेदभाव की घटनाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अनियमितताएँ भी समय-समय पर सामने आती रहती हैं। ऐसे में पूस की रात, कफ़न, ठाकुर का कुआँ, सद्गति और नमक का दारोगा जैसी कहानियाँ वर्तमान समाज को समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती हैं। प्रेमचंद का साहित्य हमें यह सिखाता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल कानूनों से नहीं, बल्कि मनुष्य की सोच, संवेदना और नैतिक चेतना में परिवर्तन से संभव है। उनकी कहानियाँ आज भी पाठकों को सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय समानता और न्याय के प्रति प्रेरित करती हैं।

निष्कर्ष:

प्रेमचंद हिंदी कहानी साहित्य के ऐसे महान रचनाकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं को साहित्य का विषय बनाया। उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ का अत्यंत व्यापक और गहन चित्रण मिलता है। किसान जीवन की पीड़ा, आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव, स्त्री की स्थिति, भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय तथा मानवीय मूल्यों का संकट-इन सभी पक्षों का उन्होंने अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवादी दृष्टि से चित्रण किया है। प्रेमचंद की विशेषता यह है कि वे केवल समस्याओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि उनके समाधान की दिशा भी प्रस्तुत करते हैं। उनके साहित्य में मानवता, न्याय, समानता, ईमानदारी, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य सर्वोपरि हैं। यही कारण है कि उनका कथा-साहित्य समय की सीमाओं से परे जाकर आज भी समाज का मार्गदर्शन करता है। वर्तमान समय में जब सामाजिक और नैतिक चुनौतियाँ निरंतर बढ़ रही हैं, तब प्रेमचंद की कहानियाँ हमें संवेदनशील, न्यायप्रिय और मानवीय बनने की प्रेरणा देती हैं। इसलिए यह कहना उचित होगा कि प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ केवल उनके युग का इतिहास नहीं, बल्कि आज के समाज का भी जीवंत दस्तावेज़ है।

संदर्भ सूची:**आधार ग्रंथ:**

1. प्रेमचंद, मुंशी (2004): कुछ विचार, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 27
2. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर, भाग-1, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 42
3. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर, भाग-1, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 164
4. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर, भाग-1, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 166
5. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर, भाग-2, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 74
6. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर, भाग-2, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 121
7. प्रेमचंद, मुंशी (1998): प्रेम द्वादशी, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 90

सहायक ग्रंथ:

1. राय, गोपाल (2015): प्रेमचंद: व्यक्तित्व और कृतित्व, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 25-42
2. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर (भाग 1), हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15-248

3. प्रेमचंद, मुंशी (2022): मानसरोवर (भाग 2), हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 10-236
4. प्रेमचंद, मुंशी (2019): प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 12-220
5. शर्मा, रामविलास (2008): प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85-156
6. वाजपेयी, नंददुलारे (2006): हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 132-148
7. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2010): हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 210-229
8. बच्चन सिंह (2009): हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 281-296
9. नामवर सिंह (2011): कहानी: नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 31-54
10. द्विवेदी, हज़ारीप्रसाद (2007): हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 175-190